Press Release

4 अक्टूबर अक्टूबर 2018. मुंबई।

जैन समुदाय को दिए वादों का सम्मान करें, झारखंड मुख्यमंत्री से अपील

दुनिया भर में धैर्य, सहिष्णुता और शांति प्रचार करने वाले महात्मा गांधी की जयंती के जश्न के सप्ताह के अवसर पर, पूरा जैन समुदाय एक साथ आकर, भारत के झारखंड के गिरीडीह जिले में स्थित शिखरजी पर्वत को बचाने के लिए अपील कर रहा है।

शिखरजी पर्वत श्रृंखला या पारसनाथ पर्वत के नाम से मशहूर इस पहाड़ी का आध्यात्मिक, सांस्कृतिक और धार्मिक इतिहास, आधुनिक इतिहास की शुरुआत से भी पुराना है। अंतर्राष्ट्रीय शोध विद्वानों को तो इस आध्यात्मिक पहाड़ी में से 12वीं शताब्दी से पुराने संस्कृत में शिलालेख होने के सबूत मिले हैं।

'सेव शिखरजी' मुहिम, भारत के उस राष्ट्रीय खजाने के आध्यात्मिक महत्व को उजागर करने वाला एक अभियान है, जहां चौबीस में से बीस जैन तीर्थंकरों के साथ-साथ कई अन्य भिक्षुओं को हज़ारों साल पहले मोक्ष प्राप्त हुआ था। आज भी लोग पूरे पारसनाथ पहाड़ी की 27 किमी की परिक्रमा काफी श्रद्धा के साथ करते हैं।

मधुबन के जंगलों में स्थित इस तीर्थ में लोग आध्यात्मिक जागरूकता का अनुभव कर सकारात्मक और शांतिपूर्ण जीवन जीना चाहते हैं, लेकिन दुर्भाग्य की बात है कि इन खूबसूरत जंगलों को भी उपेक्षित किया जा रहा है। इतना ही नहीं इन जंगलों का व्यावसायिक शोषण होने का जोखिम भी है। इसे बचाने के लिए हमें अब कार्य करना होगा।

सितंबर 2015 में, झारखंड के माननीय मुख्यमंत्री रघुबर दास ने सार्वजनिक तौर पर घोषणा की थी कि वह शिखर को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आध्यात्मिकता और ज्ञान प्राप्ति के स्थल के तौर पर विकसित करेंगे। इसके लिए उन्होंने एक जैन प्रतिनिधिमंडल का स्वागत करते हुए, पहाड़ी की पवित्रता को सुरक्षित रखते हुए, उसकी संरचना के साथ छेड़छाड़ किए बिना कुछ मूलभूत सुविधाएँ प्रदान करने में दिलचस्पी दिखाई थी।

उनके द्वारा किए गए इन वादों के बारे में आप 25 वीं सितंबर 2015 की टाइम्स ऑफ इंडिया में प्रकाशित Http://bit.ly/cmstatement को पढ़ कर अधिक जानकारी हासिल कर सकते हैं।

शिखरजी गिरीराज 20 तीर्थंकरों की निर्वाणभूमि होने के कारण जैनों का पूजा स्थल (Place of Worship) और आस्था का शीर्ष प्रतीक है। अन्य अनगिनत मुनियों - महंतों ने पहाड पर साधना करके मोक्ष प्राप्त किया है। उनकी विशुद्ध आत्माओं और उनकी अतुलनीय संकल्प- शक्तिओं से इस पावन पहाड़ी के कण कण में आध्यात्मिक स्पंदन प्रवाहित हुआ है। अतः केवल मंदिर की टेहरी नहीं संपूर्ण पहाड और उसका कण-कण पवित्र एवं पूजनीय है। अब ऐसी पवित्र भूमि का पुनः निर्माण असंभव है। उसका जतन एवं संरक्षण करना सबका परम कर्तव्य है।

तीन साल हो गये हैं, लेकिन मुख्यमंत्री रघुबर दास की घोषणाएं आज भी लाल फीता शाही और नौकरशाही में उलझी हुई है, जिसे राज्य सरकार की तरफ से कार्यान्वित करने के लिए कोई औपचारिक कार्रवाई नहीं हुई है।

सरकार की ओर से शिखरजी को 'पूजा की जगह' (Place of Worship) घोषित करने में हो रही देरी की वजह से इस तीर्थ स्थान का वाणिज्यिक शोषण और शहरीकरण हो रहा है, जिसकी वजह से यह स्थान अपनी आध्यात्मिक पवित्रता खो रहा है।

शिखरजी को 'पूजा की जगह' (Place of Worship) घोषित कर देने से इस क्षेत्र को निम्नलिखित लाभ होंगे:

· राष्ट्र का आध्यात्मिक निवास और सांस्कृतिक खजाने का संरक्षण होगा

. शांति और सहिष्णुता के संदेश को बढ़ावा मिलेगा

. इतिहास को सुरक्षित कर इसे बर्बाद करने से बचाया जा सकेगा

. मधुबन वन सीमा के वन्यजीवन की रक्षा में भी सहायता करेगा

. वन और वन्य जीवन को स्थानीय लोगों की आजीविका का साधन बना, स्थानीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा मिलेग

· मानव जाति को आध्यात्मिक रुप से निर्वाण प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहन मिलेगा

हम झारखंड सरकार से अपील करते है कि साल 2015 में किए गए अपने वादों को पूरा करते हुए शिखरजी की पवित्रता को बचाने के लिए इसे तुरंत 'पूजा की जगह' (Place of Worship) घोषित करे।

हम भारत के हर नागरिक से अपील करते हैं कि www.SaveShikharji.com पर याचिका पर हस्ताक्षर करके और हैशटैग # सेवशखारजी का उपयोग करके इसे अपने सोशल मीडिया पर साझा करे, इससे हमे हमारे इस अमूल्य आध्यात्मिक निवास की रक्षा करने और उसके प्रचार करने में सहायता मिलेगी।

“सेव शिखरजी” मुहिम के बारे में:

“सेव शिखरजी” मुहिम, जैन समुदाय का लाभ कमाने का साधन नहीं, बल्कि यह अभियान पूरी मानव जाति से एक अपील है कि वह साथ आकर इस पवित्र स्थान को बचाने के लिए हमारे साथ मिल कर आवाज़ उठाए, जिससे सरकार जल्द से जल्द इसे पूजा स्थल का दर्जा दे दे।

संपर्क करे:
सेव शिखरजी एण्ड ज्योत
हेमंत. एम. शाह
डायरेक्टर- पब्लिक रिलेशनस और गवर्मेन्ट रिलेशनस
मोबाइल नम्बर: 9820053530 / 9327038091
Email: hemantshah@shaw.ca| info@saveshikharji.com
Website: www.saveshikharji.com